

5 Jan 2012

7-10-12

Handwritten notes and stamps at the top right of the page.

कानपुर। बृहस्पतिवार। 5 जनवरी 2012

अमर उजाला

संवादक, पृष्ठ, ले गए सवाली कराई। लोए लस ने में की। पता ने देने के गृहार प्रामाण होकर र लिए लिया। ने दर्ज

को रायण ब्वा 22 ज्ञान प्रमोद गीता र्ण में इसमें छात्र-

मंडी बैठक खजे शब्ध

काइ खासा हा ता प्रपत्र भुकर आवेदन कर दें।

काशियर भमद्र कुमार न चाकादार को पत्र लिखा था। होईंग नहीं

बदल का साथ क लिए बड़पुर ब्लाक भेजा।

कनइजाबाद महासख म सुधवार का डा. संतोष प्रजापती की देखरेख में

पुष्पा सु में भाग

कंपिल का सबसे प्राचीन स्मारक मिला

● अमर उजाला ब्यूरो

कंपिल। कंपिल में खल रहे उत्खनन में फर्श निकले है। दल ने फर्श पर मिले राख व मिट्टी के नमूने लिये है। जिनके मुंबई प्रयोगशाला में कार्बन डेटिंग के लिए भेजा जावेगा। दल का अनुमान है कि यह फर्श मध्यकालीन युग के हो सकते है और उस दौरान यहाँ आबादी रही होगी। इसके अलावा एक हाथी की मूर्ति व लकड़ी की तरतरीनुमा वस्तु भी निकली है। साथ ही पुरातत्व दल ने खुदाई स्थल के पास कंपिल के सबसे प्राचीन स्मारक का भी पता लगाया है।

लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास एवं भारतीय पुरातत्व विभाग के रिसर्च टीम द्वारा करण जा रहे उत्खनन में दूसरे चरण के 10 वें दिन नई पाल्मीक के खेत में 2.70 मीटर की गहराई पर फर्श मिला। जिस पर जगह-जगह काली राख व पीली मिट्टी के बड़े-बड़े धब्बे थे। दल के सदस्य डा. विनय कुमार शर्मा ने फर्श की ब्रह्म से अच्छी तरह स्फर्ई करवाई। नमूने लेते समय काली राख में भुने हुए गेहूँ के दाने भी

- हाथी की मूर्ति, फर्श, लकड़ी की तरतरी भी निकली
- राख से भुने हुए गेहूँ के दाने मिले, जांच को भेजा



खुदाई में मिला हाथी और लकड़ी की तरतरी।

मिले। डा. शर्मा के अनुसार फर्श मध्यकालीन युग का हो सकता है। लेकिन इसका सही पता मुंबई प्रयोगशाला में कार्बन डेटिंग की रिपोर्ट से ही पता चल सकेगा। उन्होंने संभावना जताते हुए बताया कि इस समय यहाँ निश्चित रूप से आबादी रही होगी।

उन्होंने बताया कि सुबह खुदाई में एक हाथी की मूर्ति व लकड़ी के दरवाजे पर सजावट के लिए लगायी जाने वाली डिस्कें भी मिली है। जिस पर खुबसूरत फूल पत्ती बनी हुई है। दूसरे स्थान पर चल

रही खुदाई में दल को बुधवार को कोई खास वस्तु तो नहीं मिली लेकिन उसमें से निकलने वाले पोट्टी के टुकड़ों को साफ करके संग्रहित किया जा रहा है। इसके अलावा दल के लोगों ने खुदाई स्थल के आसपास के वैज्ञानिक सर्वेक्षण में एक स्मारक का भी पता लगाया है। यह लगभग 2000 वर्ष पुराने कुषाण काल का प्रतीक होता है। दल के अनुसार पुरातत्व की दृष्टि से यह कंपिल का जमीन के ऊपर दिखने वाला सबसे पुराना स्मारक है।

डा. विनय कुमार शर्मा ने बताया कि इस स्मारक में जो इंटें रागी है वह आकार की दृष्टि से ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कुषाण काल की है। उन्होंने बताया कि यह कंपिल की अमूल्य धरोहर है और इसको संरक्षित करने जाने की आवश्यकता है।

उन्होंने बताया कि खुदाई में कई स्थानों पर पिट्टे मिली है। जिनसे पता चलता है कि यहाँ लोगों ने पुरानी संघर्ष के लालच में गहराई तक खुदाई की। बाद में उस जगह को मिट्टी से भर दिया गया। दल का अनुमान है कि यहाँ के उत्खनन में महाभारतकाल व इससे पूर्व की भी संभवता प्राप्त हो सकती है। यह भूमि कालांतर में संभवताओं की परत दर परत समाती चली जाती है। खुदाई कार्य को देखने के लिए दिनभर लोगों की भीड़ जुटी रही। एलआईयू के अधिकारियों ने भी खुदाई की तथ्यपरक जानकारी जुटाई। पूर्व में इटली के भूतत्वाविद् व पुरातत्वाविद् का दल अपने वैज्ञानिक सर्वेक्षण में कंपिल में महाभारतकालीन कंपिलय नगर, गांचाल प्रदेश के मंदिर व मुद्रपं स्तूपों के मिलने की संभावना व्यक्त कर चुके है।

बि पात ● अ फर्श पर बिहार से बने पोल व ऐसे व हुआ शिक्षक बंगरा परि कालों बने खड़े गया। अभी लाइन जिन बनवा केबि जलान इस बिजा बनने जगह रहा। पोल लिया कोई